भारत को नई पहचान देने वाला है सप्रे जी का समय

जागरण सिटी रिपोर्टर। हिंदी पत्रकारिता के अग्रदूत माने जाने वाले माधवराव सप्रे के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। सप्रे जी का लेखन ऐसा था जो लोगों को स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ने के लिए न केवल प्रेरित करता है बल्कि विवश करता है। सप्रे जी का समय भारत को नई पहचान देने वाला था। इस तरह के विचार आज माधवराव सप्रे संग्रहालय के सभागार में सुनाई दिए। मौका था यहां आयोजित राष्ट्रीय परिसंवाद 'माधवराव सप्रे और उनका युग' का। परिसंवाद सप्रे संग्रहालय तथा साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा साझा तौर पर आयोजित किया गया था। इस अवसर पर तीन विचार सत्रों में विद्वानों के वक्तव्य हुए। शुभारंभ सत्र में बतौर माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि के कुलपति प्रो. केजी सुरेश उपस्थित थे। सत्र की अध्यक्षता रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे कर रहे थे। सारस्वत अतिथि प्रो. चितरंजन मिश्र, संयोजक हिन्दी परामर्श मण्डल, साहित्य अकादेमी तथा साहित्य अकादमी दिल्ली के ही अजय शर्मा थे। प्रो. केजी सुरेश ने कहा कि सप्रे जी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन के प्रति लोगों के मन में अलख जगाई। वे एक ऐसे पत्रकार थे जिन पर पहली बार राजद्रोह का मुकदमा चला था। उनकी लेखनी की खूबी यह थी कि उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन के साथ ही सामाजिक कुरीतियों पर भी प्रहार किया।